शतवार्षीक संदेश

अक्तूबर, ५, २००८

कलीसिया: चुनी हूयी प्रजा

१ पतरस २:९-१०

पवित्र शास्त्र पाठ १ पतरस २:१-११

पवित्र शास्त्र अध्ययन: निर्गमन १९:१-६; होशे १:१-११; यूहन्ना ३:१-१७

प्रस्तावीक

१३ अक्तूबर, १९०८ को, एक बडे शामीयाने के नीचे, जो टेक्सास के परिसर मे लगा था एक विशाल दर्शन स्वरूप ले रहा था। बहुत दिनो के प्रवचनों प्रार्थनाओं, विचार-विनमय और वाद-विवादों के बाद अमरिका कें विभिन्न राज्यों से आये प्रतिनिधियों को, अंतिम प्रस्ताव मिला, जिस पर मतदान होकर स्वीकार कर लिया गया। उत्सव की भावनाने लोगों को पकड लिया। लोग शामियाने के बाहर निकल गये, चारो और चक्कर लगाने लगे, गीत गाने लगे और परमेश्वर की स्तुती करने लगे। विभिन्नों के, अब वे एक हो गये।

उन्हे एक बनाने वाला वह संदेश था। विभिन्न संस्थाओं और कलीसिया के करीब १०,००० लोगों के ये प्रतिनिधि थे, जो वेस्लीद्वारा प्रचारीत, हृदय की और जीवन कि पवित्रता की परंपरा के जोशिले समर्थक थे। ये संख्या मे कम थे, लेकीन उनमे के अनेक संस्थाओं की कलीसिया और मिशन कार्य, सारे युनायटेड स्टेस, कॅनडा और मिशनरी कार्यकर्त भारत देश, केप व्हर्ड और जापान जैसे देशो मे थे, और जल्दीही उनका कार्य आफ्रीका, मेक्सीको और चीन देश मे शुरू होने वाला था। 'पवित्रता को सारे देशों मे फैलाने के तीव्र वचन बध्यता मे वे पायलट पॉईट से नीकल पडे। उनको परमेश्वर की संपूर्ण सकारात्मक दया के भावना ने नियंत्रीत किया था। सारे विश्व मे ये संदेश ले जानेकी उनकी तयारी थी।

एक सौ साल बाद, अब वही कलीसिया जो टेक्सास के परिसर मे शुरू हुयी थी, उसमे अब १.६ मिलीयन सदस्य है जो १२० भाषा में १५१ से भी अधिक देशोमे सेवा कर रही है । एक से अब हम अनेक हो गये है।

उस विश्वासीयों के झंड को यह समझ गया था की उनके संयुक्त प्रयासों मे बहुत प्रभाव है, जो की केवल किसी एक मे संभव नही। अपनी एक अलग प्रभावी पहचान बनाने के लिए वे समर्पित थे।

वे नॅझरीन थे। पवित्र आत्मा की अगवाई मे उनका पूरा भरवसा था। सुसमाचार कार्य और दयार्थ सेवा के लिए वे उत्सुक थे। और पवित्रता के संदेश के प्रती बहुत आवेशपूर्ण थे।

तथा वे अपने कार्य की विशालता को समझते थे। थोडे समय के बाद विश्व 'महायुध्द' मे फस गया। सेवा के लिए नये दरवाजे तो खुल गये लेकिन, इस बढते संस्था की धन-संपदा कम पडने लगी। और जल्दीही दूसरे विश्व युध्द के कारण बहुत से देश मे मिशनरी कार्यकारी पकडे गये तो कूच बंदी बनाये गये।

किंतू यह कलीसिया का सेवा कार्य चलता रहा और कलीसिया बढती गयी। जागतीक महाकाय तनाव के बावजूद स्थानीय कलीसियों की स्थापना होती रही। पाठशाला और दवाखाने खोले गये इस तरह यह कलीसिया दुनियाभर फैलती गयी।

दूसरे विश्व युध्द के बाद अमेरिका मे इस कलीसिया मे अभूतपूर्व वृध्दी हुयी। सौंकी संख्या मे कलीसियोंकी स्थापना हुयी, नये प्रांतोंकी स्थापना की गयी, कालेजों मे वृध्दी हुयी, कोलॅरॅडो स्प्रींग मे नॅझरीन बायीबल कॉलेज और कॅंसस सिटी मे नॅझरीन थियॅलोजीकल सेमेनरी की स्थापना हुयी। बढती कलीसियो जागतीक मिशन कार्य के लिए कार्यकारी लोग और धन बेरोख देने लगे। जल्दी ही मिशनरी कार्यकर्ता की संख्या १००० हो गयी, और नॅझरीन मिशन कार्य क्षेत्र बढने लगे। जागतीक सुसमाचार प्रचार का कार्य बहुत प्रभावी था इस कारण प्रथम शताब्दीकी अंतिम सालों मे कलीसिया की सदस्य संख्या, विश्व-भागों में अमेरिका और कॅनडा की सदस्य संख्या से भी जादा हो गयी।

इन सौ सालों मे, जिस तीव्र भावना के कारण नॅझरीन कलीसिया की स्थापना हुयी, और जो विभिन्नों से एक बन गयी ताकी विश्व के सभी देशों मे अपने पवित्रताके संदेश के द्वारा मसिह जैसे शिष्य बना सके।

सन १९०८ जिस उत्प्रेरक ने इस कलीसियाकों संघटीत किया वह पवित्रता का संदेश था। और इस विश्वास और आज्ञाकारीता के महान प्रयोग की भविष्य की आशा भी यही पवित्रता का संदेश है।

अब सारे विश्वभर फैले हम एक लोग है । जो तीव्र भावना से सुसमाचार प्रचार, शिष्यता का प्रक्षिशण और दयार्थ सेवा करने वाले वही संदेश के अनुसारी जाने जाते है।

लेकिन यह संदेश हमसे उत्पन्न हुआ नही। और हम तकही सिमीत नही।

नये नियम की अपनी दो पत्रीयोंमे, संत पतरस, जो वड़ा उत्साही और निष्ठावान यीशु का शिष्य था, उसने मध्य आशिया के बिखरे मसिही लोगोंको लिखा, जो भूभाग अब तूर्की देश का हिस्सा हैं, पतरस विश्वासियोंको जो अपने संदेश स्थिरता और प्रभाव के प्रती तीव्र प्रतिरोध को सह रहे थे, उन्हे चुनौती देता है की दृढतासे खडे रहें।

पतरस उन्हे अपनी सच्ची पहचान की याद करता है । वे नयी इस्त्राएल है। मसिहा के द्वारा उनका नाता परमेश्वर के पुराने नियम के वादेसे जुड गया है। अब वे परमेश्वर की नयी जाति है।

I. चुने हुये लोग

पतरस अपने पत्रीको पढनेवालों को यह स्पष्ट करता है की वे अपनेही प्रयास से परमेश्वर के लोग नही बने। वो कहता है की वे चुने हुये लोग है। वे दया से बनाये हुये लोग है। वे अपने अस्तीत्व और संदेश के मूल माध्यम नही है। परमेश्वर ने उन्हे अस्तित्व मे लाया, अपनी जाति होने।

पतरस अपनी पत्रीके आरंभ मे, उन्हे परमेश्वर के ‘चुने हुये लोग’ कहकर संबोधीत करता है (१ पतरस १:२).

‘‘पवित्र आत्मा के पवित्रकरण’’ के द्वारा परमेश्वर ने उने इस तरह प्रदान किया ताकी उनका, अस्तित्व उसकी जाति बन जाये।

यह चुनाव केवल उनके लिए ही नही था जिनको पतरस यह चिठ्ठी लिख रहा है । यह तो परमेश्वर के सारे लोगों की सर्वसामान्य विरासत है। हमारे उद्धार का वही (परमेश्वर) आरंभ करता और सृष्ठी करता है । उसीने हमको चुना है।

यह भरोसा ही नॅझरीन कलीसिया के शतवार्षीक उत्सव को ताकद और महत्व प्रदान करता है। परमेश्वर ने हमे चुना है, हमे रचा है , और हमे कृपापात्र लोग बनाया है, यह हमारा विश्वास है। अपनीही दया और करुणा के कारण उसने हमे यीशु मसिहा के आज्ञाकारी बनाया है, और हमे एक दूसरे के संपर्क मे एक करारबध्द समाज बनाया है ।

पतरस इस जकडने वाले सत्यको प्रकाश करता है : ‘‘एक समय तुम तो कोई जातिही नही थे, लेकिन अब तुम परमेश्वर के लोग हो।’’ (२:१०)

यह सच्चाई केवल हमारी ही नही है; इस अनोखी विरासत के भागी वे सब है, जीहोंने उसके प्रारंभिक दया को प्रतिसाद दिया है। उसने सभी लोगों को अपनी ओर आने का नियंत्रण दिया है, और जो सब यीशु मसिहा को अपना उध्दार करता और स्वामी मानते है, उन सबका मिलाके एक करार-बंध समाज बनाया है।

क्या आप इस सत्य को जानते है? क्या आपने परमेश्वर के अद्भत क्षमा और दया का अनुभव किया है? आप उसे जान सकते है। यही हमारे संदेश का मर्म है। आप स्वय: प्रभू यीशु मसिहा को व्यक्तिगत रूपसे जान सकते है, अभी आजाही ! अपने हृदय से बहती करुणा के द्वारा वों आपको अपने पास बुला रहा है। प्रभु यीशु मसिह का आप के लिए कितना प्यार है यह उनके क्लेशमय मृत्यूसे मापा जाता है।

क्या आप उन्हे जानते है? क्या उन्हे जानना चाहते है? आप जान सकते है, आज ही । आप भी इस नये जाति का हिस्सा बन सकते हो, परमेश्वर के लोग बन सकते हो। आपको उसकी जरूरत है यह जानलो। अपने पापोंका पश्चताप उसके पास करो। उन पापोंसे मूह मोड़ लो। इसी वक्त! पूर्ण रूपसे ! और उसपर विश्वास करो!

पतरस बिखरे हुये और अधिकतर समय अकेले लोक जो विशाल क्षेत्र मे फैल गये थे, उनको लिखता है, ताकी इस कठिण परिक्षा के समय मे उन्हे विश्वास के लिए प्रेरणा मिले। वो कहता है, तुम अकेले नही हो, तुम परमेश्वर के हो, और तुमसे अब एक नयी जाति बन गयी है - 'परमेश्वर के लोग'।

II. एक पवित्र लोग

पतरस आगे दावेके साथ कहता है, की उस चुनाव का महत्वपूर्ण अंश है, कि तुम एक पवित्र जाति हो । (२:९)

मिस्त्र से छूटकारा पाने के बाद जब इस्त्राएली लोगोनें सीनै पर्वत के पास डेरे लगाये थे तब परमेश्वर मुसा के द्वारा बोला 'समस्त पृथ्वी तो मेरी है, किंतू तुम मेरी दृष्टी में याजकोंका राज्य और पविद्र जाति ठहरोगे। (निर्गमन १९:६)

पतरस भी उसी दावे को निर्भीक दोहराता है जो सारे विश्वासीयोंके लिए है; ''तूम एक चूना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की प्रजा हो''।

शमौन पतरस इस्त्राएल कि विरासत पर अधिकार के साथ दावा जताता है, और उनको भी लागू करता जिनको, यह चिठ्ठी लिखता है। आप को परमेश्वर पिताने चूना है और निर्धारीत किया है पवित्र आत्मा के द्वारा शुध्द किये है ताकी यीशु मसिह के आज्ञाकारी बने, पतरस कहता है। यही तुम्हारी विरासत है। यही तुम्हारा भविष्य है। तुम परमेश्वर की पवित्र प्रजा हो।

इस चिठ्ठी मे पहीले भी पतरस ने इस्त्राएल कि विरासत को निवेदन किया है। ''आज्ञाकारी बालकों के समान अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो। पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन मे पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, ''पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ ''। (१ पतरस १:१४-१६)

पतरस अपने पढनेवालोंको जिस पवित्रता के लिए बुलाता है इसी विरासत के लिए परमेश्वर ने नॅझरीन कलीसिया को बुलाया है। हमने जानबूझकर इस पवित्रता के बुलाहट को गले लगाया है। इसे हमारी विश्वास की धारा मे अंकित किया है। हमारे प्रवचन का यही भावावेश है। यह हमारे जीवन का भाव है।

हम नॅझरीन लोग एक समाज और व्यक्ति जो इस समाज को बनाते है, हम पवित्र वंश होने के लिए बुलाये गये है। पवित्र आत्मा के पवित्रकरण के कार्य के द्वारा जिन्हे पवित्रता दी गयी है, उसे हम जीवन से प्रगट करते है, और हमे प्रभू यीशु मसिह की आज्ञाकारीता के लिए बुलावा मिला है।

यह आज्ञाकारीता प्रेम और दया, करुणा और स्वीकृति के खातीर है। यह आज्ञाकारीता पाप का उसके हर रूप मे दृढ़ निश्चय से प्रतिरोध करता है और चारो ओर से धिरे संसार-सादृश्य होने से प्रतिरोध करता है।

यह आज्ञाकारिता, यीशु मसीह के प्रभुत्व के प्रति मूलभूत समर्पण है, तथा उस जीवन के लिए जो आत्मा की समर्थ पाया है हर एक प्रकार के मनुष्य से प्यार के लिए। और इसी आज्ञाकारीता के लोगों की जरूरतो को पुरा करने मे हम भी जूटे है।

मै आप से यह पुछना चाहता हूं। यह अनोखी पवित्रता की करुणा संपूर्ण शुध्दीकरण यह एक सिध्दांत से भी अधिक है। यह हम नॅझरीन लोगों का गहराई का जिवन है और हमारे सारे इतिहास मे इसी का प्रचार हमने किया है। हमारे अस्तित्व का यह कारण है। किंतू जो प्रश्न मै आपसे पुछना चाहता हूं वो यह है: क्या आपने इस अनोखे दया का अनुभव किया है? क्या परमेश्वर की आत्मा को अपने अंदर कार्य करने दिया है? उसे पास आकर्षित करने दिया है, ताकी मसीह के रूप मे आपको वो सजा सके, उसके प्रतिरूप मे डाल सके? क्या आप उस घड़ी तक आये जब आपने अपना संपूर्ण समर्पण पवित्र आत्मा के पवित्रीकरण के लिये किया है? वह तुम मे समा जाना चाहता है। वह तुम्हारे हृदय को शुध्द करना चाहता है। वह तुम्हे इस समर्पण के लिए निमंत्रीत करता है। यह उसकी तुम्हारे लिए इच्छा है।

क्या उसकी पूर्णता आप चाहते है? क्या आप अपना मुक्ती पाया जीवन केवल उसेही अर्पण करने तयार है? क्या आप अपनी आत्माकी हर गहराई का स्वामी उसे होने देंगे? उसपर विश्वास करो। उसेही समर्पीत हो। उसे स्वीकार करो। वह तुम्हे अपनी आत्मा से भरने तयार है।

यह हमारे कलीसिया की सर्वसामान्य विरासत है। इसी प्रकार का जीवन, हम विश्वास के प्रति समर्पीत समाज का होना है। यह हमारे भागीदारी का माध्यम है जिसके द्वारा हर एक जण, परमेश्वर की पवित्रता और उसके शुध्दीकरण के सामर्थ्य को व्यक्तिगत अनुभव मे लाया जाता है।

नॅझरीन कलीसिया के आरंभ के दिनों से ही, यही संदेश हमारे संस्था का मुख्य महयांश रहा है। हम संसार भर मे सुसमाचार प्रचार इसिलिए करते है ताकी विश्वासीयों को उस जीवन का पूर्व रूपांतर करनेवाले अनुभव मे ले जाये, जो पवित्र परमेश्वर से होता है, जो परमेश्वर चाहता है की अपने लोगोंका ''परीपूर्ण रिती से'' शुध्दीकरण हो जाये।

III. भेजे हूये लोग

पतरस यह भी कहता है की हम चुनी हुयी जाति, राजपदधारी याजकरण पवित्र राष्ट्र, परमेश्वर की प्रजा हो ''इसलिए कि जिसने तुम्हे अंधकार मे से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो'' (२:९) हम भेजे हुये लोग है।

यह हमारी संपत्ति केवल अपने ही स्वार्थ के लिये नही है। हमे यह कार्याधिकार दिया है की हम परमेश्वर के महान कार्योंका प्रचार करे। चुने जाने के बाद, मुक्ती पाकर, परिवर्तन होकर और पवित्रीकरण होकर हमे भेजा भी गया है। यह चूनाव केवल हमारा ही नही, किंतू सारे जगत के लिए है।

पतरस अपनी दूसरी पत्री मे यह बात बहुत स्पष्ट करता है: ''प्रभू अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नही करता, जैसी देर कुछ लोग समझते है। पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरना यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।'' (२ पतरस ३:९)

यह संभव है, प्रभु यीशु ने अपने शिष्योंको, नीकदेमुस के साथ हुआ वार्तालाप बताया, जो यूहन्ना की रचित सुसमाचार के तीसरे अध्याय मे लिखा है। यह स्पष्ट है की पतरस ने भी खोये हुयोंकें प्रती उसी प्यार को अपनाया है जो यीशु मे था। जिस परमेश्वर ने जगत से इतना प्यार किया कि अपने एकलौते पुत्र को दे दिया, ताकि किसीका नाश न हो यही उसकी इच्छा थी।

उसी दृढ़ विश्वास ने विश्व भर के नॅझरीन कलीसिया को प्रेरित किया है। जब तक कोई भी मसीहा बीना है हम आराम से नही बैठ सकते । हमारा धर्म-कार्य निर्भीक और साहसी है: मसीह स्वरूप शिष्योंको राष्ट्रों में बनाना। हम परमेश्वर के भेजे हुये लोग है, जिनको उसकी करुणा के भरपूरीका संदेश चारो ओर सबको सुनाने का पाचारण किया है। दया से अनुप्रेरित होकर तीव्र आशावाद से भरे, परमेश्वर के आत्माकी सामर्थ्य मे हम जगत को जीतने चले है।

हम भेजे हुये है। यह हमारी विरासत है, यह हमारा धर्म-कार्य है।

समाप्ती और निमंत्रण

नॅझरीन कलीसिया, बिते १०० वर्ष के विश्वव्यापी सेवाकार्य से जुटाये आत्मीक साधनों से आनेवाले शताब्दी का सामना करने तयार है। हमारी ईश्वरी विरासत है, शानदार इतिहास है, और विश्वव्यापी सेवाकार्य है। विश्वभर मे जो सेवाकार्य हमारे भरवसांपूर्ण कर्मीयों द्वारा किया गया है, उसके कारण हम जरूर उत्सव मना सकते है।

हमारा ईस्वरविज्ञान पवित्र शास्त्र अधारीत है, और धर्मपरायण नेताओंकी परंपरा है, जिन्होने बडी विश्वस्ता के साथ कलीसियाकों निर्देशित किया और हमेशा प्रोत्साहन दिया है। हमारे कलीसियोंका एक दूसरे से जुड़ा ऐसा प्रसारण कार्य है, जो अच्छे योजना युक्त स्थिती मे है, जिसके द्वारा लाखों, पुरुषो और महिलाओं लड़के और लड़कीयों को जीवन बदलने वाला यीशु मसीह का संदेश सूनाया जाता है। और हमारा यह दृढ़ निश्चय है की हम, वेसली द्वारा प्रचारीत-पवित्रताका सुसमाचार शिक्षा और शिष्यता, विश्वासहारता से नये विश्वासियोंको सिखाये ताकी वे भी अपनी अंदर और उनके द्वारा परमेश्वर के पवित्रीकरण के विपूल सामर्थ का अनूभव करे।

आनेवाले शताब्दी पर हम दावा कर सकते है। हमे केवल भूतकाल की सफलता का उत्सव ही मनाना नही, ना ही खोये हुये मौकोंका शौक करते बैठना है। यह घड़ी अब हमारे हाथ है, दुनिया को बदलने की। परमेश्वर की दया से हम लगातार, ‘‘चूने हुये लोग, राज पदधारी याजकगण, पवित्र राष्ट्र, परमेश्वर का वंश, बने रह सकते है, ताकी जिसने हमे अंधकार से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया, उसकी महीमा प्रगट करते रहे’’। (२:९)

इस प्रवचन के आरंभ मे मै ने आपके दो महत्वपूर्ण सवाल किऐ थे। एक प्रश्न का संबंध था, आपके यीशु के साथ के व्यक्तिगत उद्धार करता के संबंध के विषय मे। मै आप से फिर से पुछना चाहता हु: क्या आप उसे जानते हो? क्या आपने उस अनोखे अनुभव को पाया है, जिसके द्वारा आप उसकी संतान बने, क्षमा पाये, उसके परिवार मे गोद ले लिये, और उस जीवन को पाये जो केवल यीशु ही दे सकता है ? अगर नही, तो आज से और अच्छा कौन सा समय होगा!

जो विश्वासी है उन्हे मै दुसरा सवाल करता हूं: क्या परमेश्वर की आत्माको, आप ने, परिपूर्ण रूप से अपने को पवित्र करने दिया है? क्या आप ने उस आनंद को अनुभव किया है जो अवर्णनिय है जो यीशु को अपने आत्मा का अद्वितीय स्वामी माननेसे होता है? वह आपको स्वयं जैसे बनानेकी लालसा रखता है। वह चाहता है की आपको अपने पवित्र प्यार से भर दे। वह चाहता है की, आपका हृदय कोई दुसरे प्रतियोगी प्रभूसत्ता से शुध्द हो। वह यह कर सकता है। अभी कर सकता है । क्या उसे यह आप करने देंगे? फिर सें मै कहता हूं, आज से अच्छा कौंनसा समय होंगा!

- जैसी. सी. मीड्‌डणड्रॉफ, जागतिक अध्यक्ष

(सूचना : निम्तलिखीत अंश को शतवार्षिक संदेस के बाज् के स्तंभ मे रखे)

पाद्री महोदय,

आज इस शतवार्षीक रविवार के दिन, हमारा केवल यही सौभाग्य नही कि हम हमारे इतिहास और विरासत का उत्सव मनाये, किंतू यह सुसमाचार प्रचारका भी मौंका है ताकी लोगोंको यीशु के लिए, निर्णय करने का अवसर मिले। आपको मै अनुरोध करता हु की आप इस शास्त्रभाग और संदेश का इस्तेमाल करे, ताकी उनको उत्साहीत कर सके जो पाप की क्षमा के लिए यीशु के पास, पश्चाताप के साथ आना चाहते है और उद्धार को पूर्ण रूपसे पाना चाहते है। और उन विश्वासीयोंको बिंन्ती करे। जिन्होने अब तक पवित्रीकरण का अनुभव नही किया है, वह भी अपना जीवन परमेश्वर को पूर्णरूपसे अर्पीत करे और उसके आत्मा की पूर्णता पा सके।

मै प्रार्थना करता रहूंगा, ताकी आप आज अपने लोगोंको प्रभू के पास ले जाने मे वो आप को सफल करे । आज का दिन केवल उध्दार और पवित्रता पर संदेश ही देनेका नही, किंतू उनके साथ उत्सव मनाने का हो, जो आप पहिली बार यह अनुभव करेंगें।

- जैसी. सी, मीड्‌डणड्रॉफ, जागतीक अध्यक्ष

प्रिय नॅझरीन युरेशिया क्षेत्र के पाद्री,

EURASIA REGION

आपको युरेशिया क्षेत्रीय कार्यालय की ओरसे नमःस्कार । यह मेरा सौभाग्य है, की मै आपको नॅझरीन के इतिहास मे घटने वाले एक महत्वपूर्ण घटना के विषय मे लिखू: जो है शतवार्षिक उत्सव! नॅझरीन कलीसिया अपना १०० वा वार्षिकोत्सव, ५ अक्तूबर, २००८ को मनायेगा।

जैसा की आप जानते ही हो, अनेक शामील होकर एक कलीसिया की स्थापना १९०८ मे हुयी थी। इस प्रकार विभिन्न कलिसियोंका शामील होना लगाकर जारी रहा और १९१५ मे नॅझरीन कलीसिया १० विभिन्न देशोमें उपस्थित हुयी, जिस मे दो देश, भारत और स्कॉटलँड अभी युरेशिया क्षेत्र मे है।

यह स्वाभाविक भिन्नता जो प्रारंभसे इस का हिस्सा है, अलग अलग कलीसिया अपनी संस्कृती भाषा और राष्ट्रीय विशेषताओं को संकलित रही, किंतू एक सिद्धांत मानती रही जो विश्वास से उध्दार और पवित्रताका जीवन है। यह आजतक होता रहा है।

इसी इतिहास से शतवार्षिक उत्सव के ध्येय की प्रेरणा मिली है।

''अनेकों को मिलाकर एक, एक से अनेक''

इन दिनों मे युरेशिया क्षेत्र मे हर दिन एक तो कलीसिया की स्थापना होती है, इससे यहाँ के कलीसिया की युवावंस्था ही प्रदर्शीत होती है। साथ ही साथ यहा पर कई कलीसिया ऐसी भी है जो हमारी संस्था के स्थापना होने से पूर्व ही से स्थापित हुयी थी। नॅझरीन होने के नाते यह हमारा सुयोग है की परमेश्वर ने उन सभी कलीसियों मे जो किया है और कर रहा है, उसका उत्सव मनाये, एक साथ।

जागतीक अध्यक्षोंके समीतीने ५, अक्तूबर, २००८ को 'शतवार्षिक उत्सव का रविवार' घोषित किया है। इसका उद्देश यह है की हर एक नॅझरीन को जो विश्व के १५१ से भी अधिक देशोमें फैले है, उनको ५ अक्तूबर को आनंद मनानेका मौका मिले, ताकी वे भी परमेश्वर ने नॅझरीन कलीसिया मे १०० सालों मे जो कुछ किया है उसका उत्सव करे। हर एक कलीसिया को अपनी मंडलीमे, स्थानीक भाषा और अपनी अपनी सांस्कृतीक परंपरा से यह उत्सव मनाने के लिए नियंत्रण दिया है।

बहुत से साधन और साहीत्य को इस उत्सव के लिए विशेष रूप से बनाया है। यह सब कुछ आप कंप्यूटर के माध्यम से प्राप्त कर सकते है, जो मुक्त उपलब्ध है; www.centennialresources.org पर संपर्क करे। इस घटनाकी विशेषताको जानते हुये, युरेशिया क्षेत्र के कार्यालयने कुछ महत्वपूर्ण चूने हुये, साहीत्यको विभिन्न भाषाओं में अनूवादीत किया है, जो एक लिफाफे मे इस क्षेत्र के हर पाद्रीको दिया जायेगा। यही लिफाफा अभी आप पकडे हुये हो जिसमे शामील है:

१) शतवार्षिक संदेश

२) स्मरणोत्सव इतिहास पुस्तिका

३) शतवार्षिक प्रदर्शन चित्र

शतवार्षिक रविवार का संदेश जागतीक अध्यक्ष डॉ. जेसी मीड्डणड्रॉफ ने लिखा है, 'जो एक साहित्य के रूप मे है, जिसके द्वारा हमारे विरासत और इतिहास का उत्सव मनाया जायेगा, साथ ही मे दूसरों को नियंत्रण दिया जायेगा ताकी वे मसीह मे नया जीवन का आरंभ करे और पवित्र आत्मा को उन्हे शुध्द करने दे और अपने अंदर रहने दे।

स्मरणोत्सव इतिहास पुस्तिका लिखी गयी है ताकी उसका इस्तेमाल सभासद की शिक्षा के लिए, तथा शिष्यता की शिक्षा देने के छोटे समूह मे किया जा सके । शतवार्षिक प्रदर्शन चित्र, यह प्रचार के लिए है जो कलीसिया उत्सव के विशेष कार्यक्रम के लिये लोगों को आर्कर्षीत कर सके।

इस शतवार्षिक उत्सव का ही एक अंश समझकर मै आपके कलीसिया को अक्तूबर ५ के रविवार के दिन एक विशेष दान अर्पण करने के लिए नियंत्रित करना चाहता हूं, जो नॅझरीन कलीसिया के नये जागतकि सेवाकार्य के केंद्र कि निर्माण नया युरेशिया क्षेत्र मे नये कलीसिया के विकास केंद्रों के लिये होगा। हमारी हर एक स्थानिय कलीसिया, जागतीक नॅझरीन संस्थाका हिस्सा होनेसे बहुत कुछ लाभ बीते सालों मे पायी है। इसी अंतरराष्ट्रीय संबधों के माध्यम से हमने मिशन कर्मियों को और स्वयंसेवकों को भेजा और पाया है, अॅलाबास्टर का दान, प्रार्थना भवन के निर्माण के लिए दिया और पाया भी है, पाद्रीयों को प्रशिक्षत किया और आकर्षीत किया, काम करने और साक्षी देनेवाले दलोंको भेजा और पाया है, दयार्थ सेवा मे हिस्सा लिया और सेवा पायी है इस तरह यह सूची लंबी होती ही रहेगी। यह दान देने का हमारा एक अच्छा मौका है जिसके द्वारा हम अंतरराष्ट्रीय सेवा के लिए एक बार का दान अपने कलीसियाको दे सकते है। कृपया अपने इस दान को स्पष्टरूप से, ''शतवार्षिक दान'' लिखकर अंकित करे और प्रांतीक कार्यालय या क्षेत्रीय कार्यालय मे भेजे।

आप, ५ अक्तूबर २००८, को समयसारणीपर चिन्हीत करे और इस उत्सव को आपकी कलीसियाके सभी उम्रवाले कैसे मना पायेंगे इसकी योजना बनाये? क्या आप अपनी कलीसिया का, शतवार्षिक दान देने मे मार्गदर्शन करेंगे? क्या आप मेरा साथ देंगे ताकी हम मिलकर अपने इतिहास, अपनी विभिन्नता, अपने सिद्धांत और विश्वास का उत्सव मना सके? क्या मेरे साथ हमारा शतवर्ष मनायेंगे?

सेवा मे एकसाथ,

गुस्तावो क्रॉकर, पीएच.डी

युरेशिया क्षेत्रीय, निर्देशक